ॐ

श्रीपरमात्मने नमः

श्रीमद्भगवद्गीता

पदच्छेद-अन्वय

और

साधारणभाषाटीकासहित



त्वमेव माता च पिता त्वमेव
त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव ।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव
त्वमेव सर्वं मम देवदेव ॥



गीताप्रेस, गोरखपुर

मुद्रक तथा प्रकाशक
मोतीलाल जालान
गीताप्रेस, गोरखपुर

ॐ

श्रीपरमात्मने नमः

श्रीगीताजीकी महिमा

वास्तवमें श्रीमद्भगवद्गीताका माहात्म्य वाणीद्वारा वर्णन करनेके लिये किसीका भी सामर्थ्य नहीं है, क्योंकि यह एक परम रहस्यमय ग्रन्थ है । इसमें संपूर्ण वेदोंका सार सार संग्रह किया गया है, इसका संस्कृत इतना सुन्दर और सरल है कि थोड़ा अभ्यास करनेसे मनुष्य उसको सहज ही समझ सकता है, परन्तु इसका आशय इतना गम्भीर है कि आजीवन निरन्तर अभ्यास करते रहनेपर भी उसका अन्त नहीं आता । प्रतिदिन नये नये भाव उत्पन्न होते रहते हैं इससे यह सदा ही नवीन बना रहता है । एवं एकाग्रचित्त होकर श्रद्धा, भक्तिसहित विचार करनेसे इसके पद पदमें परम रहस्य भरा हुआ प्रत्यक्ष प्रतीत होता है । भगवान्के गुण, प्रभाव और मर्मका वर्णन जिस प्रकार इस गीताशास्त्रमें किया गया है, वैसा अन्य ग्रन्थोंमें मिलना कठिन है; क्योंकि प्रायः ग्रन्थोंमें कुछ न कुछ सांसारिक विषय मिला रहता है, परन्तु "श्रीमद्भगवद्गीता" एक ऐसा अनुपमेय शास्त्र भगवान्ने कहा है कि जिसमें एक भी शब्द सदुपदेशसे खाली नहीं है । इसीलिये श्रीवेदव्यासजीने महाभारतमें गीताजीका वर्णन करनेके उपरान्त कहा है कि—

गीता सुगीता कर्तव्या किमन्यैः शास्त्रविस्तरैः।
या स्वयं पद्मनाभस्य मुखपद्माद्विनिःसृता ॥

गीता सुगीता करने योग्य है, अर्थात् श्रीगीताजीको भली प्रकार पढ़कर अर्थ और भावसहित अन्तःकरणमें धारण कर लेना मुख्य कर्तव्य है, जो कि स्वयं श्रीपद्मनाभ विष्णु भगवान्‌के मुखारविन्दसे निकली हुई है, (फिर) अन्य शास्त्रोंके विस्तारसे क्या प्रयोजन है ? तथा स्वयं भगवान्‌ने भी इसका माहात्म्य अन्तमें वर्णन किया है (अ० १८ श्लो० ६८ से ७१ तक)।

इस गीताशास्त्रमें मनुष्यमात्रका अधिकार है चाहे वह किसी भी वर्ण, आश्रममें स्थित होवे, परन्तु भगवान्‌में श्रद्धालु और भक्तियुक्त अवश्य होना चाहिये, क्योंकि अपने भक्तोंमें ही इसका प्रचार करनेके लिये भगवान्‌ने आज्ञा दी है तथा यह भी कहा है कि स्त्री, वैश्य, शूद्र और पापयोनि-वाले मनुष्य भी मेरे परायण होकर परमगतिको प्राप्त होते हैं (अ० ९ श्लो० ३२) एवं अपने अपने स्वाभाविक कर्मोंद्वारा मेरी पूजा करके मनुष्य परमसिद्धिको प्राप्त होते हैं (अ० १८ श्लो० ४६)। इन सबपर विचार करनेसे यही ज्ञात होता है कि, परमात्माकी प्राप्तिमें सभीका अधिकार है ।

परन्तु उक्त विषयके मर्मको न समझनेके कारण बहुत-से मनुष्य जिन्होंने श्रीगीताजीका केवल नाममात्र ही सुना है वे कह दिया करते हैं कि गीता तो केवल संन्यासियोंके लिये ही है और वे अपने बालकोंको भी इसी भयसे श्रीगीताजीका

अभ्यास नहीं कराते कि गीताके ज्ञानसे कदाचित् लड़का घर छोड़कर संन्यासी न हो जाय, किन्तु उनको विचार करना चाहिये कि मोहके कारण अपने क्षात्रधर्मसे विमुख होकर भिक्षाके अन्नसे निर्वाह करनेके लिये तैयार हुए अर्जुनने जिस परम रहस्यमय गीताके उपदेशसे आजीवन गृहस्थमें रहकर अपने कर्तव्यका पालन किया, उस गीताशास्त्रका यह उलटा परिणाम किस प्रकार हो सकता है ।

अतएव कल्याणकी इच्छावाले मनुष्योंको उचित है कि मोहको त्याग करके अतिशय श्रद्धा, भक्तिपूर्वक अपने बालकोंको अर्थ और भावके सहित श्रीगीताजीका अध्ययन करावें, एवं स्वयं भी इसका पठन और मनन करते हुए भगवान्की आज्ञानुसार साधन करनेमें तत्पर हो जायं; क्योंकि अति दुर्लभ मनुष्यके शरीरको प्राप्त होकर अपने अमूल्य समयका एक क्षण भी दुःखमूलक क्षणभंगुर भोगोंके भोगनेमें नष्ट करना उचित नहीं है ।

श्रीगीताका प्रधान विषय

श्रीगीताजीमें भगवान्ने अपनी प्राप्तिके लिये मुख्य दो मार्ग बताये हैं। एक सांख्ययोग, दूसरा कर्मयोग । उनमें—

(१) संपूर्ण पदार्थ मृगतृष्णाके जलकी भांति अथवा स्वप्नकी सृष्टिके सदृश मायामय होनेसे मायाके कार्यरूप संपूर्ण गुण ही गुणोंमें बर्तते हैं ऐसे समझकर मन, इन्द्रियों और शरीरद्वारा होनेवाले संपूर्ण कर्मोंमें कर्तापनके अभिमानसे

रहित होना (अ० ५ श्लोक ८, ९) तथा सर्वव्यापी सच्चिदानन्दघन परमात्माके स्वरूपमें एकीभावसे नित्य स्थित रहते हुए एक सच्चिदानन्दघन वासुदेवके सिवाय अन्य किसीके भी होनेपनेका भाव न रहना। यह तो सांख्ययोगका साधन है।

(२) और सब कुछ भगवान्‌का समझकर सिद्धि, असिद्धिमें समत्वभाव रखते हुए आसक्ति और फलकी इच्छाका त्याग करके भगवत्-आज्ञानुसार केवल भगवान्‌के ही लिये सब कर्मोंका आचरण करना। (अ० २ श्लो० ४८, अ० ५ श्लो० १०) तथा श्रद्धा, भक्तिपूर्वक मन, वाणी और शरीरसे सब प्रकार भगवान्‌के शरण होकर नाम, गुण और प्रभाव-सहित उनके स्वरूपका निरन्तर चिन्तन करना (अ० ६ श्लो० ४७)। यह निष्काम कर्मयोगका साधन है।

उक्त दोनों साधनोंका परिणाम एक होनेके कारण वास्तवमें अभिन्न माने गये हैं (अ० ५ श्लो० ४, ५), परन्तु साधनकालमें अधिकारीभेदसे दोनोंका भेद होनेके कारण दोनों मार्ग भिन्न-भिन्न बताये गये हैं (अ० ३ श्लो० ३) इसलिये एक पुरुष दोनों मार्गोंद्वारा एक कालमें नहीं चल सकता, जैसे श्रीगङ्गाजीपर जानेके लिये दो मार्ग होते हुए भी एक मनुष्य दोनों मार्गोंद्वारा एक कालमें नहीं जा सकता। उक्त साधनोंमें कर्मयोगका साधन संन्यास आश्रममें नहीं बन सकता, क्योंकि संन्यास आश्रममें कर्मोंका स्वरूपसे भी

त्याग कहा है और सांख्ययोगका साधन सभी आश्रमोंमें बन सकता है।

यदि कहो कि, सांख्ययोगको भगवान्‌ने संन्यासके नामसे कहा है, इसलिये उसका संन्यास आश्रममें ही अधिकार है, गृहस्थमें नहीं, तो यह कहना ठीक नहीं है; क्योंकि दूसरे अध्यायमें श्लोक ११ से ३० तक जो सांख्य-निष्ठाका उपदेश किया गया है उसके अनुसार भी भगवान्‌ने जगह जगह अर्जुनको युद्ध करनेकी योग्यता दिखायी है। यदि गृहस्थमें सांख्ययोगका अधिकार ही नहीं होता तो इस प्रकार भगवान्‌का कहना कैसे बन सकता? हां, इतनी विशेषता अवश्य है कि सांख्यमार्गका अधिकारी देहाभिमानसे रहित होना चाहिये। क्योंकि जबतक शरीरमें अहंभाव रहता है, तबतक सांख्ययोगका साधन भलीप्रकार समझमें नहीं आता। इसीसे भगवान्‌ने सांख्ययोगको कठिन बताया है (गीता अ० ५ श्लो० ६) और निष्काम कर्मयोग साधनमें सुगम होनेके कारण अर्जुनके प्रति जगह जगह कहा है कि, तूं निरन्तर मेरा चिन्तन करता हुआ निष्काम कर्मयोगका आचरण कर।

अथ ध्यानम्

शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं
विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभाङ्गम्।
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यं
वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम्॥

अर्थ—जिसकी आकृति अतिशय शान्त है, जो शेषनागकी शय्यापर शयन किये हुए है, जिसकी नाभिमें कमल है, जो देवताओंका भी ईश्वर और संपूर्ण जगत्का आधार है, जो आकाशके सदृश सर्वत्र व्याप्त है, नीलमेघके समान जिसका वर्ण है, अतिशय सुन्दर जिसके संपूर्ण अङ्ग हैं, जो योगियों-द्वारा ध्यान करके प्राप्त किया जाता है, जो संपूर्ण लोकोंका स्वामी है, जो जन्ममरणरूप भयका नाश करनेवाला है, ऐसे श्रीलक्ष्मीपति, कमलनेत्र विष्णु भगवान्को मैं (शिरसे) प्रणाम करता हूं।

यं ब्रह्मा वरुणेन्द्ररुद्रमरुतः स्तुन्वन्ति दिव्यैः स्तवै-
र्वेदैः साङ्गपदक्रमोपनिषदैर्गायन्ति यं सामगाः ।
ध्यानावस्थिततद्गतेन मनसा पश्यन्ति यं योगिनो
यस्यान्तं न विदुः सुरासुरगणा देवाय तस्मै नमः ॥

अर्थ—ब्रह्मा, वरुण, इन्द्र, रुद्र और मरुद्गण दिव्य स्तोत्रों-द्वारा जिसकी स्तुति करते हैं, सामवेदके गानेवाले अङ्ग, पद, क्रम और उपनिषदोंके सहित वेदोंद्वारा जिसका गायन करते हैं, योगीजन ध्यानमें स्थित तद्गत हुए मनसे जिसका दर्शन करते हैं, देवता और असुरगण (कोई भी) जिसके अन्तको नहीं जानते उस (परम पुरुष नारायण) देवके लिये मेरा नमस्कार है।

ॐ

श्रीपरमात्मने नमः

श्रीमद्भगवद्गीताके प्रधान विषयोंकी अनुक्रमणिका

अर्जुनविषादयोग नामक पहिला अध्याय ॥ १ ॥

श्लोक	विषय
१–११	दोनों सेनाओंके प्रधान प्रधान शूरवीरोंकी गणना और सामर्थ्यका कथन ।
१२–१९	दोनों सेनाओंकी शङ्खध्वनिका कथन ।
२०–२७	अर्जुनद्वारा सेनानिरीक्षणका प्रसङ्ग ।
२८–४७	मोहसे व्याप्त हुए अर्जुनके कायरता, स्नेह और शोकयुक्त वचन ।

सांख्ययोग नामक दूसरा अध्याय ॥ २ ॥

श्लोक	विषय
१–१०	अर्जुनकी कायरताके विषयमें श्रीकृष्णार्जुनका संवाद ।
११–३०	सांख्ययोगका विषय ।

कर्मयोग नामक तीसरा अध्याय ॥ ३ ॥

ज्ञानकर्मसंन्यासयोग नामक चौथा अध्याय ॥ ४ ॥

कर्मसंन्यासयोग नामक पांचवां अध्याय ॥ ५ ॥

आत्मसंयमयोग नामक छठा अध्याय ॥ ६ ॥

विभूतियोग नामक दशवां अध्याय ॥ १० ॥

विश्वरूपदर्शनयोग नामक ग्यारहवां अध्याय ॥ ११ ॥

भक्तियोग नामक बारहवां अध्याय ॥ १२ ॥

क्षेत्रक्षेत्रज्ञविभागयोग नामक तेरहवां अध्याय ॥ १३ ॥

गुणत्रयविभागयोग नामक चौदहवां अध्याय ॥ १४ ॥

पुरुषोत्तमयोग नामक पंद्रहवां अध्याय ॥ १५ ॥

दैवासुरसंपद्विभागयोग नामक सोलहवां अध्याय ॥ १६ ॥

श्रद्धात्रयविभागयोग नामक सत्रहवां अध्याय ॥ १७ ॥

मोक्षसंन्यासयोग नामक अठारहवां अध्याय ॥ १८ ॥

* ॐ तत्सदिति *

हरिः ॐ तत्सत्, हरिः ॐ तत्सत्, हरिः ॐ तत्सत्

ॐ

श्रीपरमात्मने नमः

श्रीमद्भगवद्गीताका
सूक्ष्मविषय



अर्जुनविषादयोग नामक पहिला अध्याय ॥ १ ॥

श्लोक	विषय
१	युद्धके विषयमें धृतराष्ट्रका प्रश्न ।
२	धृतराष्ट्रकृत प्रश्नके उत्तरमें द्रोणाचार्यके पास दुर्योधनके गमनका वर्णन ।
३	पाण्डवसेनाको देखनेके लिये गुरुसे दुर्योधनकी प्रार्थना ।
४–६	पाण्डवसेनाके प्रधान-प्रधान महारथियोंके नाम ।
७	अपनी सेनाके प्रधान-प्रधान शूरवीरोंको जाननेके लिये गुरुसे दुर्योधनकी प्रार्थना ।
८	दुर्योधनद्वारा अपनी सेनाके प्रधान-प्रधान महारथियोंके नामोंका कथन ।
९	दुर्योधनद्वारा अपनी सेनाके शूरवीरोंकी प्रशंसा ।
१०	दुर्योधनका पाण्डवसेनाकी अपेक्षा अपनी सेनाको अजेय बतलाना ।
११	भीष्मकी रक्षाके लिये द्रोणादि शूरवीरोंके प्रति दुर्योधनकी प्रेरणा ।
१२	दुर्योधनकी प्रसन्नताके लिये भीष्मका गर्जकर शङ्ख बजाना ।
१३	दुर्योधनकी सेनामें नाना प्रकारके बाजोंका भयङ्कर शब्द होना।
१४–१५	श्रीकृष्ण, अर्जुन और भीमसेनद्वारा शङ्खोंका बजाया जाना ।

श्लोक	विषय
१६	युधिष्ठिर, नकुल और सहदेवद्वारा शङ्खोंका बजाया जाना।
१७–१८	पाण्डवोंकी सेनाके प्रधान-प्रधान योद्धाओंद्वारा शङ्खोंका बजाया जाना।
१९	पाण्डवसेनाकी शङ्खध्वनिसे धृतराष्ट्रपुत्रोंके हृदयोंका विदीर्ण होना।
२०–२१	दुर्योधनकी सेनाको युद्धके लिये तैयार देखकर दोनों सेनाओंके बीचमें रथ खड़ा करनेके लिये भगवान्‌के प्रति अर्जुनकी प्रेरणा।
२२–२३	दुर्योधनकी सेनामें आये हुए शूरवीरोंको देखनेके लिये अर्जुनका स्वेच्छा प्रगट करना।
२४–२५	भगवान्‌का दोनों सेनाओंके बीचमें रथको खड़ा करना और अर्जुनके प्रति कौरवोंको देखनेके लिये आज्ञा देना।
२६–२७	अर्जुनका दोनों सेनाओंमें स्थित हुए बान्धवोंको देखना।
२८–३०	स्वजनोंको युद्धके लिये तैयार देखकर अर्जुनके शरीर और मनमें कायरता और शोकजनित चिह्नोंके होनेका कथन।
३१	अर्जुनका विपरीत लक्षणोंको देखकर युद्धमें स्वजनोंको मारनेसे हानि समझना।
३२–३३	स्वजनवधसे मिलनेवाले राज्य, भोग और सुखादिको अर्जुनका न चाहना।
३४–३५	अर्जुनका त्रिलोकीके राज्यके लिये भी आचार्यादि स्वजनोंको न मारनेकी इच्छा प्रगट करना।
३६	अर्जुनका अपने आततायी बान्धवोंको भी मारनेमें पाप समझना।
३७	स्वजनोंको न मारनेकी योग्यताका निरूपण।
३८–३९	लोभके कारण दुर्योधनादिकी कुलनाशक कर्ममें प्रवृत्ति देखकर भी अर्जुनका अपने लिये उससे निवृत्त होनेको योग्य समझना।
४०	कुलके नाशसे धर्मकी हानि और पापकी वृद्धि।
४१	पापकी वृद्धिसे वर्णसंकरताकी उत्पत्ति।
४२	वर्णसंकरतासे पितरोंको नरककी प्राप्ति।
४३	वर्णसंकरकारक दोषोंसे जातिधर्म और कुलधर्मका नाश।

सांख्ययोग नामक दूसरा अध्याय ॥ २ ॥

श्लोक विषय

कर्मयोग नामक तीसरा अध्याय ॥ ३ ॥

श्लोक	विषय
१९	अनासक्तभावसे कर्तव्य कर्म करनेके लिये आज्ञा और उससे भगवत्-प्राप्ति ।
२०	जनकादिके दृष्टान्तसे कर्म करनेके लिये प्रेरणा ।
२१	श्रेष्ठ पुरुषके आचरण प्रमाणस्वरूप माने जानेका कथन ।
२२–२४	भगवान्‌के लिये कोई कर्तव्य न होनेपर भी लोकसंग्रहार्थ कर्म करनेकी आवश्यकताका निरूपण ।
२५	लोकसंग्रहार्थ अनासक्तभावसे कर्म करनेके लिये प्रेरणा ।
२६	सकामी पुरुषोंकी बुद्धिमें भ्रम उत्पन्न करनेका निषेध ।
२७	मूढ़ पुरुषका लक्षण ।
२८	तत्त्ववेत्ता पुरुषका लक्षण ।
२९	अज्ञानियोंको कर्मोंसे चलायमान करनेका निषेध ।
३०	संपूर्ण कर्म भगवान्‌में अर्पण-करके युद्ध करनेकी आज्ञा ।
३१	भगवत्-सिद्धान्तके अनुकूल वर्तनेसे मुक्ति ।
३१	भगवत्-सिद्धान्तके अनुकूल न वर्तनेसे अधोगति ।
३३	स्वाभाविक कर्मोंकी चेष्टामें प्रकृतिकी प्रबलता ।
३४	राग-द्वेषके वशमें होनेका निषेध ।
३५	स्वधर्मपालनसे कल्याण और परधर्मसे हानि ।
३६	बलात्कारसे पाप करानेमें कौन हेतु है इस विषयमें अर्जुनका प्रश्न ।
३७	बलात्कारसे पाप करानेमें कामरूप हेतुका कथन ।
३८–३९	कामरूप वैरीसे ज्ञान ढका हुआ है । इस विषयका दृष्टान्तों-सहित कथन ।
४०	कामके वासस्थानोंका कथन ।
४१	इन्द्रियोंको वशमें करके कामको मारनेकी आज्ञा ।
४२	इन्द्रिय, मन और बुद्धिसे भी आत्माकी अति श्रेष्ठताका कथन ।
४३	बुद्धिसे परे आत्माको जानकर और मनको वशमें करके कामको मारनेकी आज्ञा ।

ज्ञानकर्मसंन्यासयोग नामक चौथा अध्याय ॥ ४ ॥

श्लोक	विषय
१-२	योगकी परम्परा और बहुत कालसे उसके लोप हो जानेका कथन ।
३	पुरातन योगकी प्रशंसा ।
४	श्रीकृष्ण भगवान्‌का जन्म आधुनिक मानकर अर्जुनका प्रश्न करना ।
५	श्रीभगवान्‌द्वारा अपने और अर्जुनके बहुत जन्म व्यतीत होनेका कथन ।
६	श्रीभगवान्‌के जन्मकी अलौकिकता ।
७	श्रीभगवान्‌के अवतार लेनेके समयका कथन ।
८	श्रीभगवान्‌के अवतार लेनेके कारणका कथन ।
९	श्रीभगवान्‌के जन्म-कर्मोंको दिव्य जाननेका फल ।
१०	श्रीभगवान्‌को प्राप्त हुए पुरुषोंके लक्षण ।
११	श्रीभगवान्‌को भजनेवाले पुरुषोंके अनुकूल भगवान्‌के बर्ताव-का कथन ।
१२	सकामी पुरुषोंको देवताओंके पूजनसे शीघ्र फल-प्राप्तिका कथन ।
१३	चारों वर्णोंकी रचना करनेमें भगवान्‌के अकर्तापनका कथन ।
१४	श्रीभगवान्‌के कर्मोंकी दिव्यता और उनके जाननेका फल ।
१५	पूर्वज मुमुक्षु पुरुषोंकी भाँति निष्काम कर्म करनेके लिये आज्ञा ।
१६	कर्म और अकर्मको तत्त्वसे जाननेका फल ।
१७	कर्म, विकर्म और अकर्मके स्वरूपको जाननेके लिये प्रेरणा ।
१८	कर्ममें अकर्म और अकर्ममें कर्मको तत्त्वसे जाननेका फल ।
१९	कामना और संकल्परहित आचरणवाले ज्ञानीकी प्रशंसा ।

श्लोक ... विषय ...

कर्मसंन्यासयोग नामक पांचवां अध्याय ॥ ५ ॥

श्लोक	विषय
१	संन्यास और निष्काम कर्मयोगमें कौन श्रेष्ठ है यह जाननेके लिये अर्जुनका प्रश्न ।
२	संन्यासकी अपेक्षा निष्काम कर्मयोगकी श्रेष्ठताका कथन ।
३	निष्काम कर्मयोगकी प्रशंसा ।
४–५	फलमें सांख्ययोग और निष्काम कर्मयोगकी एकता ।
६	निष्काम कर्मयोगकी अपेक्षा सांख्ययोगके साधनमें कठिनताका कथन ।
७	निष्काम कर्मयोगी कर्म करता हुआ भी लिपायमान नहीं होता है इस विषयका कथन ।
८–९	सांख्ययोगीका लक्षण ।
१०	भगवदर्थ कर्म करनेवालेकी निर्लेपतामें पद्मपत्रका दृष्टान्त ।
११	आत्मशुद्धिके लिये योगियोंके कर्माचरणका कथन ।
१२	कर्मफलके त्यागसे शान्ति और कामनासे बन्धन ।
१३	सांख्ययोगीकी स्थितिका कथन ।
१४	परमात्मामें कर्तापनके अभावका कथन ।
१५	परमात्मा किसीके पाप-पुण्यको ग्रहण नहीं करता इस विषयमें कथन ।
१६	सूर्यके दृष्टान्तसे ज्ञानकी महिमा ।
१७	परमात्मामें तद्रूप हुए महात्माओंको परमगतिकी प्राप्ति ।
१८–१९	ज्ञानियोंके समत्वभावका कथन और उनकी महिमा ।
२०–२१	ब्रह्मज्ञानीके लक्षण और उसको अक्षय सुखकी प्राप्ति ।
२२	विषयभोगोंकी निन्दा ।
२३	काम-क्रोधके वेगको जीतनेवाले योगीकी प्रशंसा ।
२४–२६	ज्ञानी महात्माओंके लक्षण और उनको निर्वाण ब्रह्मकी प्राप्ति ।

श्लोक — विषय

आत्मसंयमयोग नामक छठा अध्याय ॥६॥

ज्ञानविज्ञानयोग नामक सातवां अध्याय ॥ ७ ॥

अक्षरब्रह्मयोग नामक आठवां अध्याय ॥८॥

राजविद्याराजगुह्ययोग नामक नवां अध्याय ॥ ९ ॥

अक्षरब्रह्मयोग नामक आठवां अध्याय ॥८॥

राजविद्याराजगुह्ययोग नामक नवां अध्याय ॥ ९ ॥

अक्षरब्रह्मयोग नामक ... ाय

विश्वरूपदर्शनयोग नामक ग्यारहवां अध्याय ॥ ११ ॥

भक्तियोग नामक बारहवां अध्याय ॥१२॥

श्लोक विषय

२ भगवान्‌के सगुणरूपकी उपासना करनेवालोंकी श्रेष्ठताका कथन।

३–४ निराकार ब्रह्मके स्वरूपका कथन और उसकी उपासनासे भगवत्-प्राप्ति।

५ निराकारकी उपासनामें कठिनताका कथन।

६ भगवान्‌के सगुणरूपकी उपासनाका कथन।

७ अपने भक्तोंका शीघ्र उद्धार करनेके लिये भगवान्‌की प्रतिज्ञा।

८ ध्यानसे भगवत्-प्राप्ति।

९ अभ्यासयोगसे भगवत्-प्राप्ति।

१० भगवान्‌के लिये कर्म करनेसे भगवत्-प्राप्ति।

११ सर्व कर्मोंके फल-त्यागसे भगवत्-प्राप्ति।

१२ सर्व कर्म-फल-त्यागकी प्रशंसा।

१३–१४ सब भूतोंमें द्वेषभावसे रहित और मैत्री आदि गुणोंसे युक्त प्रिय भक्तके लक्षण।

१५ हर्षादि विकारोंसे रहित और सबको अभय देनेवाले प्रिय भक्तके लक्षण।

१६ निःस्पृहादि गुणोंसे युक्त सर्वत्यागी प्रिय भक्तके लक्षण।

१७ हर्षशोकादि विकारोंसे रहित निष्कामी प्रिय भक्तके लक्षण।

१८–१९ शत्रु-मित्रादिमें समभाववाले स्थिरबुद्धि प्रिय भक्तके लक्षण।

२० उपरोक्त गुणोंका सेवन करनेवाले भक्तोंकी महिमा।

क्षेत्रक्षेत्रज्ञविभागयोग नामक तेरहवां अध्याय ॥ १३ ॥

१ क्षेत्र और क्षेत्रज्ञके स्वरूपका कथन।

२ जीवात्मा और परमात्माकी एकताका निरूपण।

श्लोक	विषय
३	विकारसहित क्षेत्र और प्रभावसहित क्षेत्रज्ञका स्वरूप सुननेके लिये भगवान्‌की आज्ञा।
४	क्षेत्र और क्षेत्रज्ञके विषयमें ऋषि, वेद और ब्रह्मसूत्रका प्रमाण।
५	क्षेत्रके स्वरूपका कथन।
६	क्षेत्रके विकारोंका कथन।
७	ज्ञानके साधनोंमें अमानित्वादि ९ गुणोंका कथन।
८	ज्ञानके साधनोंमें अहंकारके अभावका और वैराग्यका कथन।
९	ज्ञानके साधनोंमें आसक्तिके अभावका और चित्तकी समताका कथन।
१०	ज्ञानके साधनोंमें अव्यभिचारिणी भक्तिका और एकान्त देशके सेवनका कथन।
११	ज्ञानके साधनोंमें निदिध्यासनका कथन और ज्ञानसाधनोंसे विपरीत गुणोंको अज्ञान बताना।
१२	जानने योग्य परमात्माके स्वरूपका वर्णन करनेकी प्रतिज्ञा और उसके निर्गुण स्वरूपका वर्णन।
१३	परमात्माके विश्वरूपका कथन।
१४	परमेश्वरके सगुण और निर्गुण स्वरूपकी एकताका कथन।
१५	सर्वात्मरूपसे परमात्माकी व्यापकताका कथन।
१६	उत्पत्ति, पालन और संहार करनेवाले परमेश्वरके सर्वव्यापी स्वरूपका कथन।
१७	ज्ञानद्वारा प्राप्त होने योग्य परमात्माके परम प्रकाशमय स्वरूपका कथन।
१८	क्षेत्र, ज्ञान और ज्ञेयका तत्त्व जाननेसे भगवत्-प्राप्ति होनेका कथन।
१९	प्रकृति-पुरुषकी अनादिता तथा प्रकृतिसे विकार और गुणोंकी उत्पत्तिका कथन।

गुणत्रयविभागयोग नामक चौदहवां अध्याय ॥ १४ ॥

श्लोक	विषय
३–४	प्रकृति-पुरुषके संयोगसे सर्वभूतोंकी उत्पत्तिका कथन।
५	प्रकृतिसे उत्पन्न हुए तीनों गुणोंद्वारा जीवात्माके बांधे जानेका कथन।
६	सत्त्वगुणद्वारा जीवात्माके बांधे जानेका प्रकार।
७	रजोगुणद्वारा जीवात्माके बांधे जानेका प्रकार।
८	तमोगुणद्वारा जीवात्माके बांधे जानेका प्रकार।
९	सुख, कर्म और प्रमादमें तीनों गुणोंद्वारा जीवात्माका जोड़ा जाना।
१०	दो गुणोंको दबाकर एक गुणके बढ़नेका कथन।
११	सत्त्वगुणकी वृद्धिके लक्षण।
१२	रजोगुणकी वृद्धिके लक्षण।
१३	तमोगुणकी वृद्धिके लक्षण।
१४	सत्त्वगुणकी वृद्धिमें मरनेका फल।
१५	रजोगुण और तमोगुणकी वृद्धिमें मरनेका फल।
१६	सात्त्विक, राजस और तामस कर्मोंका फल।
१७	सत्त्वगुणसे ज्ञान और रजोगुणसे लोभ तथा तमोगुणसे प्रमाद, मोह और अज्ञानकी उत्पत्ति।
१८	सात्त्विक, राजस और तामस पुरुषोंकी गतिका कथन।
१९–२०	आत्माको अकर्ता और गुणातीत जाननेसे भगवत्-प्राप्ति।
२१	गुणातीत पुरुषके विषयमें अर्जुनके तीन प्रश्न।
२२–२५	पहिले और दूसरे प्रश्नके उत्तरमें गुणातीत पुरुषके लक्षणोंका और आचरणोंका वर्णन।
२६	तीसरे प्रश्नके उत्तरमें भगवान्‌की अनन्यभक्तिसे गुणातीत होनेका वर्णन।
२७	भगवत्-स्वरूपकी महिमा।

पुरुषोत्तमयोग नामक पंद्रहवां अध्याय १५

श्लोक	विषय
१	वृक्षरूपसे संसारका वर्णन और उसके जाननेवालेकी महिमा।
२–३	संसारवृक्षका विस्तार और उसको असङ्गशस्त्रसे छेद[illegible] करनेके लिये कथन।
४	परमपदकी प्राप्तिके निमित्त भगवान्‌के शरण होनेके लिये प्रेरणा।
५	भगवत्-प्राप्तिवाले पुरुषोंके लक्षण।
६	परमपदके लक्षण और उसकी महिमा।
७	जीवात्माके स्वरूपका कथन।
८	वायुके दृष्टान्तसे जीवात्माके गमनका विषय।
९	मन-इन्द्रियोंद्वारा जीवात्माके विषय-सेवनका कथन।
१०–११	सर्व अवस्थामें स्थित आत्माको मूढ़ नहीं जानते और ज्ञानी जानते हैं इस विषयका कथन।
१२	परमेश्वरके तेजकी महिमा।
१३	संपूर्ण जगत्‌को पृथिवीरूपसे धारण करनेवाले और चन्द्र-रूपसे पोषण करनेवाले परमेश्वरके प्रभावका कथन।
१४	वैश्वानररूपसे संपूर्ण प्राणियोंके शरीरमें परमात्माकी व्यापकताका कथन।
१५	प्रभावसहित भगवान्‌के स्वरूपका कथन।
१६	क्षर और अक्षरके स्वरूपका कथन।
१७	पुरुषोत्तमके स्वरूपका कथन।
१८	पुरुषोत्तमकी महिमा।
१९	भगवान्‌को पुरुषोत्तम जाननेवालेकी महिमा
२०	इस अध्यायमें कहे हुए उपदेशका तत्त्व प्राप्ति।

दैवासुरसंपद्विभागयोग नामक सोलहवां अध्याय ॥ १६ ॥

श्लोक	विषय
१	दैवी संपदाके अभय आदि ९ गुणोंका कथन ।
२	दैवी संपदाके अहिंसा आदि ११ गुणोंका कथन ।
३	दैवी संपदाके तेज आदि ६ गुणोंका कथन ।
४	संक्षेपसे आसुरी संपदाका कथन ।
५	दैवी और आसुरी संपदाका फल ।
६	विस्तारसे आसुरी स्वभाववाले पुरुषोंके लक्षण सुननेके लिये भगवान्‌की आज्ञा ।
७	आसुरी संपदावालोंमें सदाचारके अभावका कथन ।
८	आसुरी संपदावालोंकी नास्तिकताका कथन ।
९–१२	आसुरी प्रकृतिवालोंके दुराचारका वर्णन ।
१३–१५	आसुरी प्रकृतिवालोंके ममता और अहंकारयुक्त अनेक मनोरथोंका वर्णन ।
१६	आसुरी प्रकृतिवालोंको घोर नरककी प्राप्ति ।
१७–१८	आसुरी प्रकृतिवालोंके लक्षण ।
१९	द्वेष करनेवाले नराधमोंको आसुरी योनिकी प्राप्ति ।
२०	पुनः आसुरी स्वभाववालोंको अधोगतिकी प्राप्ति ।
२१	काम, क्रोध और लोभरूप नरकके तीन द्वारोंका कथन ।
२२	श्रेयसाधनसे परमगतिकी प्राप्ति ।
२३	शास्त्रविधिको त्याग कर इच्छानुकूल वर्तनेवालोंकी निन्दा ।
२४	शास्त्रके अनुकूल कर्म करनेके लिये प्रेरणा ।

श्रद्धात्रयविभागयोग नामक सत्रहवां अध्याय ॥ १७ ॥

श्लोक	विषय
१	शास्त्रविधिको त्याग कर श्रद्धासे पूजन करनेवाले पुरुषोंकी निष्ठाके विषयमें अर्जुनका प्रश्न।
२	गुणोंके अनुसार तीन प्रकारकी स्वाभाविक श्रद्धाका कथन।
३	श्रद्धाके अनुसार पुरुषकी स्थितिका कथन।
४	देव, यक्ष और प्रेतादिके पूजनसे त्रिविध श्रद्धायुक्त पुरुषोंकी पहिचान।
५-६	शास्त्रसे विरुद्ध घोर तप करनेवालोंकी निन्दा।
७	आहार, यज्ञ, तप और दानके भेदोंको सुननेके लिये भगवान्‌की आज्ञा।
८	सात्त्विक आहारके लक्षण।
९	राजस आहारके लक्षण।
१०	तामस आहारके लक्षण।
११	सात्त्विक यज्ञके लक्षण।
१२	राजस यज्ञके लक्षण।
१३	तामस यज्ञके लक्षण।
१४	शारीरिक तपके लक्षण।
१५	वाणीसम्बन्धी तपके लक्षण।
१६	मानसिक तपके लक्षण।
१७	सात्त्विक तपके लक्षण।
१८	राजस तपके लक्षण।
१९	तामस तपके लक्षण।
२०	सात्त्विक दानके लक्षण।
२१	राजस दानके लक्षण।

मोक्षसंन्यासयोग नामक अठारहवां अध्याय ॥ १८ ॥

॥ हरिः ॐ तत्सत् ॥

* इति श्रीमद्भगवद्गीताका सूक्ष्मविषय समाप्त *



हरिः ॐ तत्सत् हरिः ॐ तत्सत् हरिः ॐ तत्सत्

बाँकेबिहारी



वंशीविभूषितकरान्नवनीरदाभात्पीताम्बरादरुणविम्बफलाधरोष्ठात् ।

किमपि तत्त्वमहं न जाने ॥

ॐ

श्रीपरमात्मने नमः

अथ श्रीमद्भगवद्गीता

भाषाटीकासहित

प्रथमोऽध्यायः

धृतराष्ट्र उवाच

धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः ।
मामकाः पाण्डवाश्चैव किमकुर्वत संजय ॥

पदच्छेदः

धर्मक्षेत्रे, कुरुक्षेत्रे, समवेताः, युयुत्सवः,
मामकाः, पाण्डवाः, च, एव, किम्, अकुर्वत, संजय ॥ १ ॥

धृतराष्ट्र बोला–

अन्वयः	शब्दार्थ	अन्वयः	शब्दार्थ
संजय	=हे संजय	मामकाः	=मेरे
धर्मक्षेत्रे	=धर्मभूमि	च	=और
कुरुक्षेत्रे	=कुरुक्षेत्रमें	एव*	=
समवेताः	=इकट्ठे हुए	पाण्डवाः	=पाण्डुके पुत्रोंने
युयुत्सवः	=युद्धकी इच्छावाले	किम्	=क्या
		अकुर्वत	=किया

* यहां "एव" शब्द समुच्चयार्थ है ।

संजय उवाच

दृष्ट्वा तु पाण्डवानीकं व्यूढं दुर्योधनस्तदा ।
आचार्यमुपसंगम्य राजा वचनमब्रवीत् ॥

दृष्ट्वा, तु, पाण्डवानीकम्, व्यूढम्, दुर्योधनः, तदा, आचार्यम्, उपसंगम्य, राजा, वचनम्, अब्रवीत् ॥ २ ॥

इसपर संजय बोला—

तदा	= उस समय	दृष्ट्वा	= देखकर
राजा	= राजा	तु	= और
दुर्योधनः	= दुर्योधनने	आचार्यम्	= द्रोणाचार्यके
व्यूढम्	= व्यूहरचनायुक्त	उपसंगम्य	= पास जाकर (यह)
पाण्डवानीकम्	= पाण्डवोंकी सेनाको	वचनम्	= वचन
		अब्रवीत्	= कहा

पश्यैतां पाण्डुपुत्राणामाचार्य महतीं चमूम् ।
व्यूढां द्रुपदपुत्रेण तव शिष्येण धीमता ॥

पश्य, एताम्, पाण्डुपुत्राणाम्, आचार्य, महतीम्, चमूम्, व्यूढाम्, द्रुपदपुत्रेण, तव, शिष्येण, धीमता ॥ ३ ॥

आचार्य	= हे आचार्य	द्रुपदपुत्रेण	= द्रुपदपुत्र धृष्टद्युम्नद्वारा
तव	= आपके		
धीमता	= बुद्धिमान्	व्यूढाम्	= व्यूहाकार खड़ी की हुई
शिष्येण	= शिष्य		

पाण्डु-पुत्राणाम्	=पाण्डुपुत्रोंकी	महतीम्	=बड़ी भारी
		चमूम्	=सेनाको
एताम्	=इस	पश्य	=देखिये

अत्र शूरा महेष्वासा भीमार्जुनसमा युधि ।
युयुधानो विराटश्च द्रुपदश्च महारथः ॥

अत्र, शूराः, महेष्वासाः, भीमार्जुनसमाः, युधि,
युयुधानः, विराटः, च, द्रुपदः, च, महारथः ॥ ४ ॥

अत्र	=इस (सेना) में	(सन्ति)	=हैं (जैसे)
महेष्वासाः	=बड़े बड़े धनुषोंवाले	युयुधानः	=सात्यकि
		च	=और
युधि	=युद्धमें	विराटः	=विराट
भीमार्जुन-समाः	=भीम और अर्जुनके समान	च	=तथा
		महारथः	=महारथी
शूराः	=बहुतसे शूरवीर	द्रुपदः	=राजा द्रुपद

धृष्टकेतुश्चेकितानः काशिराजश्च वीर्यवान् ।
पुरुजित्कुन्तिभोजश्च शैब्यश्च नरपुङ्गवः ॥

धृष्टकेतुः, चेकितानः, काशिराजः, च, वीर्यवान्,
पुरुजित, कुन्तिभोजः, च, शैब्यः, च, नरपुङ्गवः ॥ ५ ॥

च	=और	पुरुजित्	=पुरुजित्
धृष्टकेतुः	=धृष्टकेतु	कुन्तिभोजः	=कुन्तिभोज
चेकितानः	=चेकितान	च	=और
च	=तथा	नरपुङ्गवः	=मनुष्योंमें श्रेष्ठ
वीर्यवान्	=बलवान्		
काशिराजः	=काशिराज	शैब्यः	=शैब्य

युधामन्युश्च विक्रान्त उत्तमौजाश्च वीर्यवान् ।
सौभद्रो द्रौपदेयाश्च सर्व एव महारथाः ॥

युधामन्युः, च, विक्रान्तः, उत्तमौजाः, च, वीर्यवान्, सौभद्रः, द्रौपदेयाः, च, सर्वे, एव, महारथाः ॥ ६ ॥

च	=और	च	=और
विक्रान्तः	=पराक्रमी	द्रौपदेयाः	=द्रौपदीके पाँचों पुत्र
युधामन्युः	=युधामन्यु		
च	=तथा		(यह)
वीर्यवान्	=बलवान्	सर्वे	=सब
उत्तमौजाः	=उत्तमौजा	एव	=ही
सौभद्रः	=सुभद्रापुत्र अभिमन्यु	महारथाः	=महारथी हैं

अस्माकं तु विशिष्टा ये तान्निबोध द्विजोत्तम ।
नायका मम सैन्यस्य संज्ञार्थं तान्ब्रवीमि ते ॥

अस्माकम्, तु, विशिष्टाः, ये, तान्, निबोध, द्विजोत्तम,
नायकाः, मम, सैन्यस्य, संज्ञार्थम्, तान्, ब्रवीमि, ते ॥७॥

द्विजोत्तम	= हे ब्राह्मणश्रेष्ठ	ते	= आपके
अस्माकम्	= हमारे पक्षमें	संज्ञार्थम्	= जाननेके लिये
तु	= भी	मम	= मेरी
ये	= जो जो	सैन्यस्य	= सेनाके
विशिष्टाः	= प्रधान हैं	(ये)	= जो जो
तान्	= उनको	नायकाः	= सेनापति हैं
	(आप)	तान्	= उनको
निबोध	= समझ लीजिये	ब्रवीमि	= कहता हूं

भवान्भीष्मश्च कर्णश्च कृपश्च समितिंजयः ।
अश्वत्थामा विकर्णश्च सौमदत्तिस्तथैव च ॥

भवान्, भीष्मः, च, कर्णः, च, कृपः, च, समितिंजयः,
अश्वत्थामा, विकर्णः, च, सौमदत्तिः, तथा, एव, च ॥८॥

एक तो स्वयम्—

भवान्	= आप	च	= और
च	= और	समितिंजयः	= संग्रामविजयी
भीष्मः	= पितामह भीष्म	कृपः	= कृपाचार्य
च	= तथा		
कर्णः	= कर्ण	च	= तथा

तथा	= वैसे	च	= और
एव	= ही	सौमदत्तिः	= सोमदत्तका पुत्र भूरिश्रवा
अश्वत्थामा	= अश्वत्थामा		
विकर्णः	= विकर्ण		

अन्ये च बहवः शूरा मदर्थे त्यक्तजीविताः ।
नानाशस्त्रप्रहरणाः सर्वे युद्धविशारदाः ॥

अन्ये, च, बहवः, शूराः, मदर्थे, त्यक्तजीविताः,
नानाशस्त्रप्रहरणाः, सर्वे, युद्धविशारदाः ॥ ९ ॥

तथा—

अन्ये	= और	मदर्थे	= मेरे लिये
च	= भी	त्यक्तजीविताः	= जीवनकी आशाको त्यागनेवाले
बहवः	= बहुत-से	सर्वे	= सबके सब
शूराः	= शूरवीर	युद्धविशारदाः	= युद्धमें चतुर हैं
नानाशस्त्रप्रहरणाः	= अनेक प्रकारके शस्त्र अस्त्रोंसे युक्त		

अपर्याप्तं तदस्माकं बलं भीष्माभिरक्षितम् ।
पर्याप्तं त्विदमेतेषां बलं भीमाभिरक्षितम् ॥

अपर्याप्तम्, तत्, अस्माकम्, बलम्, भीष्माभिरक्षितम्,
पर्याप्तम्, तु, इदम्, एतेषाम्, बलम्, भीमाभिरक्षितम् ॥ १० ॥

और—

भीष्माभिरक्षितम्	= भीष्मपितामह-द्वारा रक्षित	तु	= और
अस्माकम्	= हमारी	भीमाभिरक्षितम्	= भीमद्वारा रक्षित
तत्	= वह	एतेषाम्	= इन लोगोंकी
बलम्	= सेना	इदम्	= यह
अपर्याप्तम्	= सब प्रकारसे अजेय है	बलम्	= सेना
		पर्याप्तम्	= जीतनेमें सुगम है

अयनेषु च सर्वेषु यथाभागमवस्थिताः ।
भीष्ममेवाभिरक्षन्तु भवन्तः सर्व एव हि ॥

अयनेषु, च, सर्वेषु, यथाभागम्, अवस्थिताः,
भीष्मम्, एव, अभिरक्षन्तु, भवन्तः, सर्वे, एव, हि ॥११॥

च	= इसलिये	सर्वे	= सबके सब
सर्वेषु	= सब	एव	= ही
अयनेषु	= मोर्चोंपर	हि	= निःसन्देह
यथाभागम्	= अपनी अपनी जगह	भीष्मम्	= भीष्मपितामहकी
अवस्थिताः	= स्थित रहते हुए	एव	= ही
भवन्तः	= आपलोग	अभिरक्षन्तु	= सब ओरसे रक्षा करें

तस्य संजनयन्हर्षं कुरुवृद्धः पितामहः ।
सिंहनादं विनद्योच्चैः शङ्खं दध्मौ प्रतापवान् ॥

तस्य, संजनयन्, हर्षम्, कुरुवृद्धः, पितामहः,
सिंहनादम्, विनद्य, उच्चैः, शङ्खम्, दध्मौ, प्रतापवान् ॥ १२ ॥

इस प्रकार द्रोणाचार्यसे कहते हुए दुर्योधनके वचनोंको सुनकर—

कुरुवृद्धः	=कौरवोंमें वृद्ध	संजनयन्	=उत्पन्न करते हुए
प्रतापवान्	=बड़े प्रतापी	उच्चैः	=उच्चस्वरसे
पितामहः	={पितामह भीष्मने	सिंहनादम्	={सिंहकी नादके समान
तस्य	={उस (दुर्योधन) के (हृदयमें)	विनद्य	=गर्जकर
		शङ्खम्	=शङ्ख
हर्षम्	=हर्ष	दध्मौ	=बजाया

ततः शङ्खाश्च भेर्यश्च पणवानकगोमुखाः ।
सहसैवाभ्यहन्यन्त स शब्दस्तुमुलोऽभवत् ॥

ततः, शङ्खाः, च, भेर्यः, च, पणवानकगोमुखाः,
सहसा, एव, अभ्यहन्यन्त, सः, शब्दः, तुमुलः, अभवत् ॥ १३ ॥

ततः	=उसके उपरान्त	भेर्यः	=नगारे
शङ्खाः	=शङ्ख		
च	=और	च	=तथा

पणव-आनक-गोमुखाः	= ढोल मृदङ्ग और नृसिंहादि बाजे	अभ्यहन्यन्त	= बजे (उनका)
सहसा	= एक साथ	सः	= वह
एव	= ही	शब्दः	= शब्द
		तुमुलः	= बड़ा भयंकर
		अभवत्	= हुआ

ततः श्वेतैर्हयैर्युक्ते महति स्यन्दने स्थितौ ।
माधवः पाण्डवश्चैव दिव्यौ शङ्खौ प्रदध्मतुः ॥

ततः, श्वेतैः, हयैः, युक्ते, महति, स्यन्दने, स्थितौ, माधवः, पाण्डवः, च, एव, दिव्यौ, शङ्खौ, प्रदध्मतुः॥१४॥

ततः	= इसके अनन्तर	माधवः	= श्रीकृष्ण महाराज
श्वेतैः	= सफेद	च	= और
हयैः	= घोड़ोंसे	पाण्डवः	= अर्जुनने
युक्ते	= युक्त	एव	= भी
महति	= उत्तम	दिव्यौ	= अलौकिक
स्यन्दने	= रथमें	शङ्खौ	= शङ्ख
स्थितौ	= बैठे हुए	प्रदध्मतुः	= बजाये

पाञ्चजन्यं हृषीकेशो देवदत्तं धनंजयः ।
पौण्ड्रं दध्मौ महाशङ्खं भीमकर्मा वृकोदरः ॥

पाञ्चजन्यम्, हृषीकेशः, देवदत्तम्, धनंजयः,
पौण्ड्रम्, दध्मौ, महाशङ्खम्, भीमकर्मा, वृकोदरः ॥१५॥

उनमें—

हृषीकेशः = श्रीकृष्ण महाराजने
पाञ्चजन्यम् = पाञ्चजन्य नामक शङ्ख
धनंजयः = अर्जुनने
देवदत्तम् = देवदत्त नामक शङ्ख (बजाया)
भीमकर्मा = भयानक कर्मवाले
वृकोदरः = भीमसेनने
पौण्ड्रम् = पौण्ड्र नामक
महाशङ्खम् = महाशङ्ख
दध्मौ = बजाया

अनन्तविजयं राजा कुन्तीपुत्रो युधिष्ठिरः ।
नकुलः सहदेवश्च सुघोषमणिपुष्पकौ ॥

अनन्तविजयम्, राजा, कुन्तीपुत्रः, युधिष्ठिरः,
नकुलः, सहदेवः, च, सुघोषमणिपुष्पकौ ॥१६॥

कुन्तीपुत्रः = कुन्तीपुत्र
राजा = राजा
युधिष्ठिरः = युधिष्ठिरने
अनन्तविजयम् = अनन्तविजय नामक शङ्ख (और)
नकुलः = नकुल
च = तथा
सहदेवः = सहदेवने
सुघोषमणिपुष्पकौ = सुघोष और मणिपुष्पक नामवाले शङ्ख (बज

काश्यश्च परमेष्वासः शिखण्डी च महारथः ।
धृष्टद्युम्नो विराटश्च सात्यकिश्चापराजितः ॥

काश्यः, च, परमेष्वासः, शिखण्डी, च, महारथः,
धृष्टद्युम्नः, विराटः, च, सात्यकिः, च, अपराजितः ॥१७॥

परमेष्वासः	= श्रेष्ठ धनुषवाला	धृष्टद्युम्नः	= धृष्टद्युम्न
काश्यः	= काशिराज	च	= तथा
च	= और	विराटः	= राजा विराट
महारथः	= महारथी	च	= और
शिखण्डी	= शिखण्डी	अपराजितः	= अजेय
च	= और	सात्यकिः	= सात्यकि

द्रुपदो द्रौपदेयाश्च सर्वशः पृथिवीपते ।
सौभद्रश्च महाबाहुः शङ्खान्दध्मुः पृथक्पृथक् ॥

द्रुपदः, द्रौपदेयाः, च, सर्वशः, पृथिवीपते,
सौभद्रः, च, महाबाहुः, शङ्खान्, दध्मुः, पृथक्, पृथक् ॥१८॥

तथा—

द्रुपदः	= राजा द्रुपद	द्रौपदेयाः	= द्रौपदीके पांचों पुत्र
च	= और		

च	=और	पृथिवीपते	=हे राजन्
महाबाहुः	=बड़ी भुजावाला	पृथक्	=अलग
		पृथक्	=अलग
सौभद्रः	=सुभद्रापुत्र अभिमन्यु	शङ्खान्	=शङ्ख
सर्वशः	=इन सबने	दध्मुः	=बजाये

स घोषो धार्तराष्ट्राणां हृदयानि व्यदारयत् ।
नभश्च पृथिवीं चैव तुमुलो व्यनुनादयन् ॥

सः, घोषः, धार्तराष्ट्राणाम्, हृदयानि, व्यदारयत्,

नभः, च, पृथिवीम्, च, एव, तुमुलः, व्यनुनादयन् ॥१९॥

च	=और	व्यनुनादयन्	=शब्दायमान करते हुए
सः	=उस		
तुमुलः	=भयानक		
घोषः	=शब्दने	धार्तराष्ट्राणाम्	=धृतराष्ट्र-पुत्रोंके
नभः	=आकाश		
च	=और	हृदयानि	=हृदय
पृथिवीम्	=पृथिवीको	व्यदारयत्	=विदीर्ण कर दिये
एव	=भी		

अथ व्यवस्थितान्दृष्ट्वा धार्तराष्ट्रान्कपिध्वजः ।
प्रवृत्ते शस्त्रसंपाते धनुरुद्यम्य पाण्डवः ॥

हृषीकेशं तदा वाक्यमिदमाह महीपते।
सेनयोरुभयोर्मध्ये रथं स्थापय मेऽच्युत ॥

अथ, व्यवस्थितान्, दृष्ट्वा, धार्तराष्ट्रान्, कपिध्वजः, प्रवृत्ते, शस्त्रसंपाते, धनुः, उद्यम्य, पाण्डवः, हृषीकेशम्, तदा, वाक्यम्, इदम्, आह, महीपते, सेनयोः, उभयोः, मध्ये, रथम्, स्थापय, मे, अच्युत ॥२०-२१॥

महीपते = हे राजन्	उद्यम्य = उठाकर
अथ = उसके उपरान्त	हृषीकेशम् = हृषीकेश श्रीकृष्ण महाराजसे
कपिध्वजः = कपिध्वज	
पाण्डवः = अर्जुनने	इदम् = यह
व्यवस्थितान् = खड़े हुए	वाक्यम् = वचन
धार्तराष्ट्रान् = धृतराष्ट्र-पुत्रोंको	आह = कहा
	अच्युत = हे अच्युत
दृष्ट्वा = देखकर	मे = मेरे
तदा = उस	रथम् = रथको
शस्त्रसंपाते प्रवृत्ते = शस्त्र चलनेकी तैयारीके समय	उभयोः = दोनों
	सेनयोः = सेनाओंके
	मध्ये = बीचमें
धनुः = धनुष	स्थापय = खड़ा करिये

यावदेतान्निरीक्षेऽहं योद्धुकामानवस्थितान् ।
कैर्मया सह योद्धव्यमस्मिन्रणसमुद्यमे ॥

यावत्, एतान्, निरीक्षे, अहम्, योद्धुकामान्, अवस्थितान्,
कैः, मया, सह, योद्धव्यम्, अस्मिन्, रणसमुद्यमे ॥२२॥

यावत्	=जबतक	अस्मिन्	=इस
अहम्	=मैं	रणसमुद्यमे=	युद्धरूप व्यापारमें
एतान्	=इन	मया	=मुझे
अवस्थितान्=	स्थित हुए	कैः	=किन-किनके
योद्धुकामान्=	युद्धकी कामना-वालोंको	सह	=साथ
निरीक्षे	= अच्छी प्रकार देख लूं (कि)	योद्धव्यम् =	युद्ध करना योग्य है

योत्स्यमानानवेक्षेऽहं य एतेऽत्र समागताः ।
धार्तराष्ट्रस्य दुर्बुद्धेर्युद्धे प्रियचिकीर्षवः ॥

योत्स्यमानान्, अवेक्षे, अहम्, ये, एते, अत्र, समागताः,
धार्तराष्ट्रस्य, दुर्बुद्धेः, युद्धे, प्रियचिकीर्षवः ॥ २३ ॥

और—

दुर्बुद्धेः	=दुर्बुद्धि	अत्र	=इस सेनामें
धार्तराष्ट्रस्य	=दुर्योधनका	समागताः	=आये हैं
युद्धे	=युद्धमें	(तान्)	=उन
प्रियचिकीर्षवः	=कल्याण चाहनेवाले	योत्स्यमानान्	=युद्ध करनेवालोंको
ये	=जो जो	अहम्	=मैं
एते	=ये राजालोग	अवेक्षे	=देखूंगा

संजय उवाच

एवमुक्तो हृषीकेशो गुडाकेशेन भारत ।
सेनयोरुभयोर्मध्ये स्थापयित्वा रथोत्तमम् ॥
भीष्मद्रोणप्रमुखतः सर्वेषां च महीक्षिताम् ।
उवाच पार्थ पश्यैतान्समवेतान्कुरूनिति ॥

एवम्, उक्तः, हृषीकेशः, गुडाकेशेन, भारत,
सेनयोः, उभयोः, मध्ये, स्थापयित्वा, रथोत्तमम् ॥२४॥
भीष्मद्रोणप्रमुखतः, सर्वेषाम्, च, महीक्षिताम्,
उवाच, पार्थ, पश्य, एतान्, समवेतान्, कुरून्, इति ॥२५॥

संजय बोला—

भारत	=हे धृतराष्ट्र	एवम्	=इस प्रकार
गुडाकेशेन	=अर्जुनद्वारा	उक्तः	=

हृषीकेशः	= महाराज श्रीकृष्ण-चन्द्रने	महीक्षिताम्	= राजाओंके सामने
उभयोः	= दोनों	रथोत्तमम्	= उत्तम रथको
सेनयोः	= सेनाओंके	स्थापयित्वा	= खड़ा करके
मध्ये	= बीचमें	इति	= ऐसे
भीष्मद्रोण-प्रमुखतः	= भीष्म और द्रोणाचार्यके सामने	उवाच	= कहा (कि)
च	= और	पार्थ	= हे पार्थ
सर्वेषाम्	= संपूर्ण	एतान्	= इन
		समवेतान्	= इकट्ठे हुए
		कुरून्	= कौरवोंको
		पश्य	= देख

तत्रापश्यत्स्थितान्पार्थः
पितॄनथ पितामहान् ।
आचार्यान्मातुलान्भ्रातॄन्
पुत्रान्पौत्रान्सखींस्तथा ॥२६॥
श्वशुरान्सुहृदश्चैव सेनयोरुभयोरपि ।

तत्र, अपश्यत्, स्थितान्, पार्थः, पितॄन्, अथ, पितामहान्, आचार्यान्, मातुलान्, भ्रातॄन्, पुत्रान्, पौत्रान्, सखीन्, तथा, श्वशुरान्, सुहृदः, च, एव, सेनयोः, उभयोः, अपि ।

अथ	= उसके उपरान्त	उभयोः	= दोनों
पार्थः	= पृथापुत्र अर्जुनने	अपि	= ही
तत्र	= उन	सेनयोः	= सेनाओंमें

स्थितान् = स्थित हुए	पौत्रान् = पौत्रोंको
पितॄन् = पिताके भाइयोंको	तथा = तथा
	सखीन् = मित्रोंको
पितामहान् = पितामहोंको	श्वशुरान् = ससुरोंको
आचार्यान् = आचार्योंको	च = और
मातुलान् = मामोंको	सुहृदः = सुहृदोंको
भ्रातॄन् = भाइयोंको	एव = भी
पुत्रान् = पुत्रोंको	अपश्यत् = देखा

तान्समीक्ष्य स कौन्तेयः सर्वान्बन्धूनवस्थितान्
कृपया परयाविष्टो विषीदन्निदमब्रवीत् ।

तान्, समीक्ष्य, सः, कौन्तेयः, सर्वान्, बन्धून्, अवस्थितान् ॥
कृपया, परया, आविष्टः, विषीदन्, इदम्, अब्रवीत् ।

इस प्रकार—

तान् = उन	कृपया = करुणासे
अवस्थितान् = खड़े हुए	आविष्टः = युक्त हुआ
सर्वान् = संपूर्ण	कौन्तेयः = कुन्तीपुत्र अर्जुन
बन्धून् = बन्धुओंको	विषीदन् = शोक करता हुआ
समीक्ष्य = देखकर	इदम् = यह
सः = वह	अब्रवीत् = बोला
परया = अत्यन्त	

गाण्डीवम्, स्रंसते, हस्तात्, त्वक्, च, एव, परिदह्यते,

न, च, शक्नोमि, अवस्थातुम्, भ्रमति, इव, च, मे, मनः॥३०॥

तथा—

हस्तात्	=हाथसे	मे	=मेरा
गाण्डीवम्	=गाण्डीव धनुष	मनः	=मन
स्रंसते	=गिरता है	भ्रमति इव	=भ्रमित-सा हो रहा है
च	=और		
त्वक्	=त्वचा	(अतः)	=इसलिये (मैं)
एव	=भी	अवस्थातुम्	=खड़ा रहनेको
परिदह्यते	=बहुत जलती है	च	=भी
च	=तथा	न शक्नोमि	=समर्थ नहीं हूं

निमित्तानि च पश्यामि विपरीतानि केशव।
न च श्रेयोऽनुपश्यामि हत्वा स्वजनमाहवे॥

निमित्तानि, च, पश्यामि, विपरीतानि, केशव,

न, च, श्रेयः, अनुपश्यामि, हत्वा, स्वजनम्, आहवे॥३१॥

और—

केशव	=हे केशव	पश्यामि	=देखता हूं (तथा)
निमित्तानि	=लक्षणोंको	आहवे	=युद्धमें
च	=भी	स्वजनम्	=अपने कुलको
विपरीतानि	=विपरीत (ही)	हत्वा	=मारकर

श्रेयः	=कल्याण	न	=नहीं
च	=भी	अनुपश्यामि	=देखता

न काङ्क्षे विजयं कृष्ण न च राज्यं सुखानि च।
किं नो राज्येन गोविन्द किं भोगैर्जीवितेन वा॥

न, काङ्क्षे, विजयम्, कृष्ण, न, च, राज्यम्, सुखानि, च,
किम्, नः, राज्येन, गोविन्द, किम्, भोगैः, जीवितेन, वा॥३२॥

और—

कृष्ण	=हे कृष्ण (मैं)	(काङ्क्षे)	=चाहता
विजयम्	=विजयको	गोविन्द	=हे गोविन्द
न	=नहीं	नः	=हमें
काङ्क्षे	=चाहता	राज्येन	=राज्यसे
च	=और	किम्	=क्या (प्रयोजन है)
राज्यम्	=राज्य	वा	=अथवा
च	=तथा	भोगैः	=भोगोंसे (और)
सुखानि	=सुखोंको (भी)	जीवितेन	=जीवनसे (भी)
न	=नहीं	किम्	=क्या (प्रयोजन है)

येषामर्थे काङ्क्षितं नो राज्यं भोगाः सुखानि च।
त इमेऽवस्थिता युद्धे प्राणांस्त्यक्त्वा धनानि च॥

येषाम्, अर्थे, काङ्क्षितम्, नः, राज्यम्, भोगाः, सुखानि, च,
ते, इमे, अवस्थिताः, युद्धे, प्राणान्, त्यक्त्वा, धनानि, च॥३३॥

क्योंकि—

नः	=हमें	इमे	=यह सब
येषाम्	=जिनके	धनानि	=धन
अर्थे	=लिये	च	=और
राज्यम्	=राज्य	प्राणान्	=जीवन (की आशा) को
भोगाः	=भोग	त्यक्त्वा	=त्यागकर
च	=और	युद्धे	=युद्धमें
सुखानि	=सुखादिक	अवस्थिताः	=खड़े हैं
काङ्क्षितम्	=इच्छित हैं		
ते	=वे (ही)		

आचार्याः पितरः पुत्रास्तथैव च पितामहाः । मातुलाः श्वशुराः पौत्राः श्यालाः सम्बन्धिनस्तथा

आचार्याः, पितरः, पुत्राः, तथा, एव, च, पितामहाः,
मातुलाः, श्वशुराः, पौत्राः, श्यालाः, सम्बन्धिनः, तथा ॥३४॥

जो कि—

आचार्याः	=गुरुजन	मातुलाः	=मामा
पितरः	=ताऊ चाचे	श्वशुराः	=ससुर
पुत्राः	=लड़के	पौत्राः	=पोते
च	=और	श्यालाः	=साले
तथा	=वैसे	तथा	=तथा (और भी)
एव	=ही	सम्बन्धिनः	=सम्बन्धी लोग हैं
पितामहाः	=दादा		

एतान्न हन्तुमिच्छामि घ्नतोऽपि मधुसूदन ।
अपि त्रैलोक्यराज्यस्य हेतोः किं नु महीकृते ॥

एतान्, न, हन्तुम्, इच्छामि, घ्नतः, अपि, मधुसूदन,
अपि, त्रैलोक्यराज्यस्य, हेतोः, किम्, नु, महीकृते ॥ ३५ ॥

इसलिये—

मधुसूदन	=हे मधुसूदन (मुझे)	एतान्	=इन सबको
घ्नतः	=मारनेपर	हन्तुम्	=मारना
अपि	=भी (अथवा)	न	=नहीं
त्रैलोक्य-राज्यस्य	=तीन लोकके राज्यके	इच्छामि	=चाहता (फिर)
हेतोः	=लिये	महीकृते	=पृथिवीके लिये (तो)
अपि	=भी (मैं)	नु किम्	=कहना ही क्या है

निहत्य धार्तराष्ट्रान्नः का प्रीतिः स्याज्जनार्दन ।
पापमेवाश्रयेदस्मान्हत्वैतानाततायिनः ॥ ३६ ॥

निहत्य, धार्तराष्ट्रान्, नः, का, प्रीतिः, स्यात्, जनार्दन,
पापम्, एव, आश्रयेत्, अस्मान्, हत्वा, एतान्, आततायिनः ॥

जनार्दन	=हे जनार्दन	निहत्य	=मारकर (भी)
धार्तराष्ट्रान्	=धृतराष्ट्रके पुत्रोंको	नः	=हमें
		का	=क्या

प्रीतिः	=प्रसन्नता		(तो)
स्यात्	=होगी	अस्मान्	=हमें
एतान्	=इन	पापम्	=पाप
आततायिनः	=आततायियोंको	एव	=ही
हत्वा	=मारकर	आश्रयेत्	=लगेगा

तस्मान्नार्हा वयं हन्तुं धार्तराष्ट्रान्स्वबान्धवान्।
स्वजनं हि कथं हत्वा सुखिनः स्याम माधव ॥

तस्मात्, न, अर्हाः, वयम्, हन्तुम्, धार्तराष्ट्रान्, स्वबान्धवान्, स्वजनम्, हि, कथम्, हत्वा, सुखिनः, स्याम, माधव ॥३७॥

तस्मात्	=इससे	न अर्हाः	=योग्य नहीं हैं
माधव	=हे माधव	हि	=क्योंकि
स्वबान्धवान्	=अपने बान्धव	स्वजनम्	=अपने कुटुम्बको
धार्तराष्ट्रान्	=धृतराष्ट्रके पुत्रोंको	हत्वा	=मारकर (हम)
		कथम्	=कैसे
हन्तुम्	=मारनेके लिये	सुखिनः	=सुखी
वयम्	=हम	स्याम	=होंगे

यद्यप्येते न पश्यन्ति लोभोपहतचेतसः ।
कुलक्षयकृतं दोषं मित्रद्रोहे च पातकम् ॥

यद्यपि, एते, न, पश्यन्ति, लोभोपहतचेतसः, कुलक्षयकृतम्, दोषम्, मित्रद्रोहे, च, पातकम् ॥ ३८ ॥

यद्यपि	= यद्यपि	च	= और
लोभोपहत-चेतसः	= लोभसे भ्रष्ट-चित्त हुए	मित्रद्रोहे	= मित्रोंके साथ विरोध करनेमें
एते	= यह लोग	पातकम्	= पापको
कुलक्षयकृतम्	= कुलके नाशकृत	न	= नहीं
दोषम्	= दोषको	पश्यन्ति	= देखते हैं

कथं न ज्ञेयमस्माभिः पापादस्मान्निवर्तितुम् ।
कुलक्षयकृतं दोषं प्रपश्यद्भिर्जनार्दन ॥

कथम्, न, ज्ञेयम्, अस्माभिः, पापात्, अस्मात्, निवर्तितुम्, कुलक्षयकृतम्, दोषम्, प्रपश्यद्भिः, जनार्दन ॥ ३९ ॥

परन्तु—

जनार्दन	= हे जनार्दन	अस्मात्	= इस
कुलक्षयकृतम्	= कुलके नाश करनेसे होते हुए	पापात्	= पापसे
		निवर्तितुम्	= हटनेके लिये
दोषम्	= दोषको	कथम्	= क्यों
प्रपश्यद्भिः	= जाननेवाले	न	= नहीं
अस्माभिः	= हमलोगोंको	ज्ञेयम्	= विचार करना चाहिये

कुलक्षये प्रणश्यन्ति कुलधर्माः सनातनाः ।
धर्मे नष्टे कुलं कृत्स्नमधर्मोऽभिभवत्युत ॥

कुलक्षये, प्रणश्यन्ति, कुलधर्माः, सनातनाः,
धर्मे, नष्टे, कुलम्, कृत्स्नम्, अधर्मः, अभिभवति, उत ॥४०॥

क्योंकि—

कुलक्षये	= कुलके नाश होनेसे	कृत्स्नम्	= संपूर्ण
सनातनाः	= सनातन	कुलम्	= कुलको
कुलधर्माः	= कुलधर्म	अधर्मः	= पाप
प्रणश्यन्ति	= नष्ट हो जाते हैं	उत	= भी
धर्मे	= धर्मके	अभिभवति	= बहुत दबा लेता है
नष्टे	= नाश होनेसे		

अधर्माभिभवात्कृष्ण प्रदुष्यन्ति कुलस्त्रियः।
स्त्रीषु दुष्टासु वार्ष्णेय जायते वर्णसंकरः॥

अधर्माभिभवात्, कृष्ण, प्रदुष्यन्ति, कुलस्त्रियः,
स्त्रीषु, दुष्टासु, वार्ष्णेय, जायते, वर्णसंकरः ॥४१॥

तथा—

कृष्ण	= हे कृष्ण		(और)
अधर्माभिभवात्	= पापके अधिक बढ़ जानेसे	वार्ष्णेय	= हे वार्ष्णेय
कुलस्त्रियः	= कुलकी स्त्रियां	स्त्रीषु	= स्त्रियोंके
प्रदुष्यन्ति	= दूषित हो जाती हैं	दुष्टासु	= दूषित होनेपर
		वर्णसंकरः	= वर्णसंकर
		जायते	= उत्पन्न होता है

संकरो नरकायैव कुलघ्नानां कुलस्य च ।
पतन्ति पितरो ह्येषां लुप्तपिण्डोदकक्रियाः ॥

संकरः, नरकाय, एव, कुलघ्नानाम्, कुलस्य, च,
पतन्ति, पितरः, हि, एषाम्, लुप्तपिण्डोदकक्रियाः ॥४२॥

और वह—

संकरः = वर्णसंकर	लुप्तपिण्डोदकक्रियाः = लोप हुई पिण्ड और जलकी क्रियावाले
कुलघ्नानाम् = कुलघातियोंको	एषाम् = इनके
च = और	पितरः = पितरलोग
कुलस्य = कुलको	हि = भी
नरकाय = नरकमें ले जानेके लिये	पतन्ति = गिर जाते हैं
एव = ही (होता है)	

दोषैरेतैः कुलघ्नानां वर्णसंकरकारकैः ।
उत्साद्यन्ते जातिधर्माः कुलधर्माश्च शाश्वताः ॥

दोषैः, एतैः, कुलघ्नानाम्, वर्णसंकरकारकैः,
उत्साद्यन्ते, जातिधर्माः, कुलधर्माः, च, शाश्वताः ॥४३॥

और—

एतैः = इन	दोषैः = दोषोंसे
वर्णसंकरकारकैः = वर्णसंकरकारक	कुलघ्नानाम् = कुलघातियोंके

शाश्वताः	= सनातन	जातिधर्माः	= जातिधर्म
कुलधर्माः	= कुलधर्म	उत्साद्यन्ते	= नष्ट हो जाते हैं
च	= और		

उत्सन्नकुलधर्माणां मनुष्याणां जनार्दन।
नरकेऽनियतं वासो भवतीत्यनुशुश्रुम॥

उत्सन्नकुलधर्माणाम्, मनुष्याणाम्, जनार्दन,
नरके, अनियतम्, वासः, भवति, इति, अनुशुश्रुम ॥४४॥

तथा—

जनार्दन	= हे जनार्दन	नरके	= नरकमें
उत्सन्नकुल-धर्माणाम्	= नष्ट हुए कुलधर्मवाले	वासः	= वास
		भवति	= होता है
मनुष्याणाम्	= मनुष्योंका	इति	= ऐसा (हमने)
अनियतम्	= अनन्त कालतक	अनुशुश्रुम	= सुना है

अहो बत महत्पापं कर्तुं व्यवसिता वयम्।
यद्राज्यसुखलोभेन हन्तुं स्वजनमुद्यताः॥

अहो, बत, महत्पापम्, कर्तुम्, व्यवसिताः, वयम्,
यत्, राज्यसुखलोभेन, हन्तुम्, स्वजनम्, उद्यताः ॥४५॥

संकरो नरकायैव कुलघ्नानां कुलस्य च ।
पतन्ति पितरो ह्येषां लुप्तपिण्डोदकक्रियाः ॥

संकरः, नरकाय, एव, कुलघ्नानाम्, कुलस्य, च,
पतन्ति, पितरः, हि, एषाम्, लुप्तपिण्डोदकक्रियाः ॥४२॥

और वह—

संकरः	=वर्णसंकर	लुप्तपिण्डोदकक्रियाः	=लोप हुई पिण्ड और जलकी क्रियावाले
कुलघ्नानाम्	=कुलघातियोंको	एषाम्	=इनके
च	=और	पितरः	=पितरलोग
कुलस्य	=कुलको	हि	=भी
नरकाय	=नरकमें ले जानेके लिये	पतन्ति	=गिर जाते हैं
एव	=ही (होता है)		

दोषैरेतैः कुलघ्नानां वर्णसंकरकारकैः ।
उत्साद्यन्ते जातिधर्माः कुलधर्माश्च शाश्वताः ॥

दोषैः, एतैः, कुलघ्नानाम्, वर्णसंकरकारकैः,
उत्साद्यन्ते, जातिधर्माः, कुलधर्माः, च, शाश्वताः ॥४३॥

और—

एतैः	=इन	दोषैः	=दोषोंसे
वर्णसंकरकारकैः	=वर्णसंकरकारक	कुलघ्नानाम्	=कुलघातियोंके

शाश्वताः	= सनातन	जातिधर्माः	= जातिधर्म
कुलधर्माः	= कुलधर्म	उत्साद्यन्ते	= नष्ट हो जाते हैं
च	= और		

उत्सन्नकुलधर्माणां मनुष्याणां जनार्दन ।
नरकेऽनियतं वासो भवतीत्यनुशुश्रुम ॥

उत्सन्नकुलधर्माणाम्, मनुष्याणाम्, जनार्दन,
नरके, अनियतम्, वासः, भवति, इति, अनुशुश्रुम ॥४४॥

तथा—

जनार्दन	= हे जनार्दन	नरके	= नरकमें
उत्सन्नकुल-धर्माणाम्	= नष्ट हुए कुलधर्मवाले	वासः	= वास
		भवति	= होता है
मनुष्याणाम्	= मनुष्योंका	इति	= ऐसा (हमने)
अनियतम्	= अनन्त कालतक	अनुशुश्रुम	= सुना है

अहो बत महत्पापं कर्तुं व्यवसिता वयम् ।
यद्राज्यसुखलोभेन हन्तुं स्वजनमुद्यताः ॥

अहो, बत, महत्पापम्, कर्तुम्, व्यवसिताः, वयम्,
यत्, राज्यसुखलोभेन, हन्तुम्, स्वजनम्, उद्यताः ॥४५॥

अहो	=अहो	व्यवसिताः	=तैयार हुए हैं
बत	=शोक है (कि)	यत्	=जो कि
वयम्	=हमलोग (बुद्धिमान् होकर भी)	राज्यसुख-लोभेन	=राज्य और सुखके लोभसे
		स्वजनम्	=अपने कुलको
महत्पापम्	=महान् पाप	हन्तुम्	=मारनेके लिये
कर्तुम्	=करनेको	उद्यताः	=उद्यत हुए हैं

यदि मामप्रतीकारमशस्त्रं शस्त्रपाणयः।
धार्तराष्ट्रा रणे हन्युस्तन्मे क्षेमतरं भवेत्॥

यदि, माम्, अप्रतीकारम्, अशस्त्रम्, शस्त्रपाणयः,
धार्तराष्ट्राः, रणे, हन्युः, तत्, मे, क्षेमतरम्, भवेत्॥४६॥

यदि	=यदि	रणे	=रणमें
माम्	=मुझ	हन्युः	=मारें (तो)
अशस्त्रम्	=शस्त्ररहित	तत्	=वह (मारना भी)
अप्रतीकारम्	=न सामना करनेवालेको	मे	=मेरे लिये
शस्त्रपाणयः	=शस्त्रधारी	क्षेमतरम्	=अति कल्याण-कारक
धार्तराष्ट्राः	=धृतराष्ट्रके पुत्र	भवेत्	=होगा

संजय उवाच

एवमुक्त्वार्जुनः संख्ये रथोपस्थ उपाविशत् ।
विसृज्य सशरं चापं शोकसंविग्नमानसः ॥

एवम्, उक्त्वा, अर्जुनः, संख्ये, रथोपस्थे, उपाविशत्,
विसृज्य, सशरम्, चापम्, शोकसंविग्नमानसः ॥४७॥

संजय बोला कि—

संख्ये	= रणभूमिमें	सशरम्	= बाणसहित
शोकसंविग्न-मानसः	= शोकसे उद्विग्न मनवाला	चापम्	= धनुषको
		विसृज्य	= त्यागकर
अर्जुनः	= अर्जुन	रथोपस्थे	= रथके पिछले भागमें
एवम्	= इस प्रकार		
उक्त्वा	= कहकर	उपाविशत्	= बैठ गया

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु
ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुन-
संवादेऽर्जुनविषादयोगो नाम
प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

इति श्रीमद्भगवद्गीतारूपी उपनिषद् एवं ब्रह्मविद्या तथा
योगशास्त्रविषयक श्रीकृष्ण और अर्जुनके
संवादमें "अर्जुनविषादयोग" नामक
पहला अध्याय ॥ १ ॥

हरिः ॐ तत्सत् हरिः ॐ तत्सत् हरिः ॐ तत्सत्

ॐ

श्रीपरमात्मने नमः

अथ द्वितीयोऽध्यायः

संजय उवाच

तं तथा कृपयाविष्टमश्रुपूर्णाकुलेक्षणम् ।
विषीदन्तमिदं वाक्यमुवाच मधुसूदनः ॥

तम्, तथा, कृपया, आविष्टम्, अश्रुपूर्णाकुलेक्षणम्,
विषीदन्तम्, इदम्, वाक्यम्, उवाच, मधुसूदनः ॥ १ ॥

संजय बोला कि—

तथा	= पूर्वोक्त प्रकारसे	तम्	= उस (अर्जुन) के प्रति
कृपया	= करुणा करके	मधुसूदनः	= भगवान् मधुसूदनने
आविष्टम्	= व्याप्त (और)	इदम्	= यह
अश्रुपूर्णाकुलेक्षणम्	= आंसुओंसे पूर्ण (तथा) व्याकुल नेत्रोंवाले	वाक्यम्	= वचन
विषीदन्तम्	= शोकयुक्त	उवाच	= कहा

श्रीभगवानुवाच

कुतस्त्वा कश्मलमिदं विषमे समुपस्थितम् ।
अनार्यजुष्टमस्वर्ग्यमकीर्तिकरमर्जुन ॥२॥



क्लैब्यं मा स्म गमः पार्थ नैतत्त्वय्युपपद्यते । क्षुद्रं हृदयदौर्बल्यं त्यक्त्वोत्तिष्ठ परंतप ॥

कुतः, त्वा, कश्मलम्, इदम्, विषमे, समुपस्थितम्,
अनार्यजुष्टम्, अस्वर्ग्यम्, अकीर्तिकरम्, अर्जुन ॥ २ ॥

अर्जुन	=हे अर्जुन		(यह)
त्वा	=तुमको (इस)	अनार्यजुष्टम् =	न तो श्रेष्ठ पुरुषोंसे आचरण किया गया है
विषमे	=विषमस्थलमें		
इदम्	=यह		
कश्मलम्	=अज्ञान	अस्वर्ग्यम् =	न स्वर्गको देनेवाला है
कुतः	=किस हेतुसे		
समुपस्थितम्	=प्राप्त हुआ	अकीर्तिकरम् =	न कीर्तिको करनेवाला है
(यतः)	=क्योंकि		

क्लैब्यं मा स्म गमः पार्थ नैतत्त्वय्युपपद्यते ।
क्षुद्रं हृदयदौर्बल्यं त्यक्त्वोत्तिष्ठ परंतप ॥

क्लैब्यम्, मा, स्म, गमः, पार्थ, न, एतत, त्वयि, उपपद्यते,
क्षुद्रम्, हृदयदौर्बल्यम्, त्यक्त्वा, उत्तिष्ठ, परंतप ॥ ३ ॥

इसलिये—

पार्थ	=हे अर्जुन	त्वयि	=तेरेमें
क्लैब्यम्	=नपुंसकताको	न उपपद्यते	=योग्य नहीं है
मा स्म गमः	=मत प्राप्त हो	परंतप	=हे परंतप
एतत्	=यह	क्षुद्रम्	=तुच्छ

हृदय-दौर्बल्यम्	= हृदयकी दुर्बलताको	उत्तिष्ठ	= युद्धके लिये खड़ा हो
त्यक्त्वा	= त्यागकर		

अर्जुन उवाच

कथं भीष्ममहं संख्ये द्रोणं च मधुसूदन।
इषुभिः प्रति योत्स्यामि पूजार्हावरिसूदन॥

कथम्, भीष्मम्, अहम्, संख्ये, द्रोणम्, च, मधुसूदन,
इषुभिः, प्रति, योत्स्यामि, पूजार्हौ, अरिसूदन॥ ४॥

तब अर्जुन बोला कि—

मधुसूदन	= हे मधुसूदन	कथम्	= किस प्रकार
अहम्	= मैं	इषुभिः	= बाणों करके
संख्ये	= रणभूमिमें	योत्स्यामि	= युद्ध करूंगा
भीष्मम्	= भीष्मपितामह	(यतः)	= क्योंकि
च	= और	अरिसूदन	= हे अरिसूदन
द्रोणम्	= द्रोणाचार्यके	(तौ)	= वे दोनों ही
प्रति	= प्रति	पूजार्हौ	= पूजनीय हैं

गुरूनहत्वा हि महानुभावान्
श्रेयो भोक्तुं भैक्ष्यमपीह लोके।
हत्वार्थकामांस्तु गुरूनिहैव
भुञ्जीय भोगान्रुधिरप्रदिग्धान्॥ ५॥

गुरून्, अहत्वा, हि, महानुभावान्, श्रेयः, भोक्तुम्, भैक्ष्यम्, अपि, इह, लोके, हत्वा, अर्थकामान्, तु, गुरून्, इह, एव, भुञ्जीय, भोगान्, रुधिरप्रदिग्धान् ॥ ५ ॥

इसलिये इन—

महानुभावान्	=महानुभाव	गुरून्	=गुरुजनोंको
गुरून्	=गुरुजनोंको	हत्वा	=मारकर
अहत्वा	=न मारकर	(अपि)	=भी
इह	=इस	इह	=इस लोकमें
लोके	=लोकमें	रुधिरप्रदिग्धान्	=रुधिरसे सने हुए
भैक्ष्यम्	=भिक्षाका अन्न	अर्थकामान्	=अर्थ और कामरूप
अपि	=भी	भोगान्	=भोगोंको
भोक्तुम्	=भोगना	एव	=ही
श्रेयः	=कल्याणकारक (समझता हूं)	तु	=तो
हि	=क्योंकि	भुञ्जीय	=भोगूंगा

न चैतद्विद्मः कतरन्नो गरीयो
यद्वा जयेम यदि वा नो जयेयुः ।
यानेव हत्वा न जिजीविषाम-
स्तेऽवस्थिताः प्रमुखे धार्तराष्ट्राः ॥६॥

न, च, एतत्, विद्मः, कतरत्, नः, गरीयः, यद्वा, जयेम, यदि, वा, नः, जयेयुः, यान्, एव, हत्वा, न, जिजीविषामः, ते, अवस्थिताः, प्रमुखे, धार्तराष्ट्राः ॥ ६ ॥

और हमलोग—

एतत् = यह
च = भी
न = नहीं
विद्मः = जानते (कि)
नः = हमारे लिये
कतरत् = क्या (करना)
गरीयः = श्रेष्ठ है
यद्वा = { अथवा (यह भी नहीं जानते कि)
जयेम = हम जीतेंगे
यदि वा = या
नः = हमको
जयेयुः = वे जीतेंगे (और)
यान् = जिनको
हत्वा = मारकर (हम)
न जिजीविषामः = { जीना भी नहीं चाहते
ते = वे
एव = ही
धार्तराष्ट्राः = { धृतराष्ट्रके पुत्र
प्रमुखे = हमारे सामने
अवस्थिताः = खड़े हैं

कार्पण्यदोषोपहतस्वभावः
पृच्छामि त्वां धर्मसंमूढचेताः ।
यच्छ्रेयः स्यान्निश्चितं ब्रूहि तन्मे
शिष्यस्तेऽहं शाधि मां त्वां प्रपन्नम् ॥

कार्पण्यदोषोपहतस्वभावः, पृच्छामि, त्वाम्, धर्मसंमूढचेताः, यत्, श्रेयः, स्यात्, निश्चितम्, ब्रूहि, तत्, मे, शिष्यः, ते, अहम्, शाधि, माम्, त्वाम्, प्रपन्नम् ॥ ७ ॥

इसलिये—

कार्पण्य-दोषोपहत-स्वभावः = { कायरतारूप दोष करके उपहत हुए स्वभाववाला	श्रेयः = { कल्याणकारक साधन
	स्यात् = हो
	तत् = वह
(और)	मे = मेरे लिये
धर्म-संमूढचेताः = { धर्मके विषयमें मोहितचित्त हुआ (मैं)	ब्रूहि = कहिये (क्योंकि)
	अहम् = मैं
	ते = आपका
त्वाम् = आपको	शिष्यः = शिष्य हूं (इसलिये)
पृच्छामि = पूछता हूं	त्वाम् = आपके
यत् = जो (कुछ)	प्रपन्नम् = शरण हुए
निश्चितम् = { निश्चय किया हुआ	माम् = मेरेको
	शाधि = शिक्षा दीजिये

न हि प्रपश्यामि ममापनुद्याद्
यच्छोकमुच्छोषणमिन्द्रियाणाम् ।

अवाप्य भूमावसपत्नमृद्धं
राज्यं सुराणामपि चाधिपत्यम् ॥८॥

न, हि, प्रपश्यामि, मम, अपनुद्यात्, यत्, शोकम्, उच्छोषणम्, इन्द्रियाणाम्, अवाप्य, भूमौ, असपत्नम्, ऋद्धम्, राज्यम्, सुराणाम्, अपि, च, आधिपत्यम् ॥ ८ ॥

हि =क्योंकि
भूमौ =भूमिमें
असपत्नम् =निष्कण्टक
ऋद्धम् =धनधान्यसंपन्न
राज्यम् =राज्यको
च =और
सुराणाम् =देवताओंके
आधिपत्यम्=स्वामीपनेको
अवाप्य =प्राप्त होकर
अपि =भी (मैं)

(तत्) =उस (उपाय)को
न =नहीं
प्रपश्यामि =देखता हूं
यत् =जो कि
मम =मेरी
इन्द्रियाणाम् =इन्द्रियोंके
उच्छोषणम् =सुखानेवाले
शोकम् =शोकको
अपनुद्यात् =दूर कर सके

संजय उवाच

एवमुक्त्वा हृषीकेशं गुडाकेशः परंतप ।
न योत्स्य इति गोविन्दमुक्त्वा तूष्णीं बभूव ह॥

एवम्, उक्त्वा, हृषीकेशम्, गुडाकेशः, परंतप, न, योत्स्ये, इति, गोविन्दम्, उक्त्वा, तूष्णीम्, बभूव, ह ॥९॥

संजय बोला—

परंतप	= हे राजन्	गोविन्दम्	= श्रीगोविन्द भगवान्‌को
गुडाकेशः	= निद्राको जीतनेवाला अर्जुन	न योत्स्ये	= युद्ध नहीं करूंगा
हृषीकेशम्	= अन्तर्यामी श्रीकृष्ण महाराजके प्रति	इति	= ऐसे
		ह	= स्पष्ट
		उक्त्वा	= कहकर
एवम्	= इस प्रकार	तूष्णीम्	= चुप
उक्त्वा	= कहकर (फिर)	बभूव	= हो गया

तमुवाच हृषीकेशः प्रहसन्निव भारत।
सेनयोरुभयोर्मध्ये विषीदन्तमिदं वचः॥१०॥

तम्, उवाच, हृषीकेशः, प्रहसन्, इव, भारत,
सेनयोः, उभयोः, मध्ये, विषीदन्तम्, इदम्, वचः ॥१०॥

उसके उपरान्त—

भारत	= हे भरतवंशी धृतराष्ट्र	तम्	= उस
		विषीदन्तम्	= शोकयुक्त अर्जुनको
हृषीकेशः	= अन्तर्यामी श्रीकृष्ण महाराजने	प्रहसन् इव	= हंसते हुए-से
उभयोः	= दोनों	इदम्	= यह
सेनयोः	= सेनाओंके	वचः	= वचन
मध्ये	= बीचमें	उवाच	= कहा

श्रीभगवानुवाच

अशोच्यानन्वशोचस्त्वं प्रज्ञावादांश्च भाषसे ।
गतासूनगतासूंश्च नानुशोचन्ति पण्डिताः ॥

अशोच्यान्, अन्वशोचः, त्वम्, प्रज्ञावादान्, च, भाषसे,
गतासून्, अगतासून्, च, न, अनुशोचन्ति, पण्डिताः ॥ ११ ॥

हे अर्जुन—

त्वम् = तूं
अशोच्यान् = न शोक करने योग्योंके लिये
अन्वशोचः = शोक करता है
च = और
प्रज्ञावादान् = पण्डितोंके (से) वचनोंको
भाषसे = कहता है
(परंतु)
पण्डिताः = पण्डितजन
गतासून् = जिनके प्राण चले गये हैं उनके लिये
च = और
अगतासून् = जिनके प्राण नहीं गये हैं उनके लिये
(भी)
न = नहीं
अनुशोचन्ति = शोक करते हैं

न त्वेवाहं जातु नासं न त्वं नेमे जनाधिपाः ।
न चैव न भविष्यामः सर्वे वयमतः परम् ॥

न, तु, एव, अहम्, जातु, न, आसम्, न, त्वम्,
न, इमे, जनाधिपाः, न, च, एव, न, भविष्यामः,
सर्वे, वयम्, अतः, परम्, ॥ १२ ॥

क्योंकि आत्मा नित्य है इसलिये शोक करना अयुक्त है । वास्तवमें-

न	=न	न	=नहीं
तु	=तो	(आसन्)	=थे
(एवम्)	=ऐसा	च	=और
एव	=ही (है कि)	न	=न
अहम्	=मैं	(एवम्)	=ऐसा
जातु	=किसी कालमें	एव	=ही (है कि)
न	=नहीं	अतः	=इससे
आसम्	=था (अथवा)	परम्	=आगे
त्वम्	=तूं	वयम्	=हम
न	=नहीं	सर्वे	=सब
(आसीः)	=था (अथवा)	न	=नहीं
इमे	=यह	भविष्यामः	=रहेंगे
जनाधिपाः	=राजालोग		

देहिनोऽस्मिन्यथा देहे कौमारं यौवनं जरा ।
तथा देहान्तरप्राप्तिर्धीरस्तत्र न मुह्यति ॥

देहिनः, अस्मिन्, यथा, देहे, कौमारम्, यौवनम्, जरा, तथा, देहान्तरप्राप्तिः, धीरः, तत्र, न, मुह्यति, ॥१३॥

किन्तु-

यथा	=जैसे	देहे	=देहमें
देहिनः	=जीवात्माकी	कौमारम्	=कुमार
अस्मिन्	=इस	यौवनम्	=युवा (और)

जरा	=वृद्ध अवस्था (होती है)	तत्र	=उस विषयमें
तथा	=वैसे ही	धीरः	=धीर पुरुष
देहान्तर-प्राप्तिः	=अन्य शरीरकी प्राप्ति होती है	न	=नहीं
		मुह्यति	=मोहित होता है–

अर्थात् जैसे कुमार, युवा और जरा अवस्थारूप स्थूल शरीरका विकार अज्ञानसे आत्मामें भासता है वैसे ही एक शरीरसे दूसरे शरीरको प्राप्त होनारूप सूक्ष्म शरीरका विकार भी अज्ञानसे ही आत्मामें भासता है इसलिये तत्त्वको जाननेवाला धीर पुरुष इस विषयमें नहीं मोहित होता है–

मात्रास्पर्शास्तु कौन्तेय शीतोष्णसुखदुःखदाः
आगमापायिनोऽनित्यास्तांस्तितिक्षस्व भारत

मात्रास्पर्शाः, तु, कौन्तेय, शीतोष्णसुखदुःखदाः, आगमापायिनः, अनित्याः, तान्, तितिक्षस्व, भारत ॥१४॥

कौन्तेय	=हे कुन्तीपुत्र	तु	=तो
शीतोष्ण-सुखदुःखदाः	=सर्दी गर्मी और सुख दुःखको देनेवाले	आगमा-पायिनः	=क्षणभङ्गुर (और)
		अनित्याः	=अनित्य हैं (इसलिये)
मात्रास्पर्शाः	=इन्द्रिय और विषयोंके संयोग	भारत	=हे भरतवंशी अर्जुन

तान्	= उनको (तूं)	तितिक्षस्व	= सहन कर

यं हि न व्यथयन्त्येते पुरुषं पुरुषर्षभ ।
समदुःखसुखं धीरं सोऽमृतत्वाय कल्पते ॥

यम्, हि, न, व्यथयन्ति, एते, पुरुषम्, पुरुषर्षभ,
समदुःखसुखम्, धीरम्, सः, अमृतत्वाय, कल्पते ॥ १५ ॥

हि	= क्योंकि	एते	= यह (इन्द्रियों-के विषय)
पुरुषर्षभ	= हे पुरुषश्रेष्ठ		
समदुःख-सुखम्	= दुःखसुखको समान समझने-वाले	न व्यथयन्ति	= व्याकुल नहीं कर सकते
यम्	= जिस	सः	= वह
धीरम्	= धीर	अमृतत्वाय	= मोक्षके लिये
पुरुषम्	= पुरुषको	कल्पते	= योग्य होता है

नासतो विद्यते भावो नाभावो विद्यते सतः ।
उभयोरपि दृष्टोऽन्तस्त्वनयोस्तत्त्वदर्शिभिः ॥

न, असतः, विद्यते, भावः, न, अभावः, विद्यते, सतः,
उभयोः, अपि, दृष्टः, अन्तः, तु, अनयोः, तत्त्वदर्शिभिः ॥ १६ ॥

और हे अर्जुन—

असतः	= असत् (वस्तु) का तो	भावः	= अस्तित्व
		न	= नहीं

जरा	=वृद्ध अवस्था (होती है)	तत्र	=उस विषयमें
तथा	=वैसे ही	धीरः	=धीर पुरुष
देहान्तर-प्राप्तिः	=अन्य शरीरकी प्राप्ति होती है	न	=नहीं
		मुह्यति	=मोहित होता है-

अर्थात् जैसे कुमार, युवा और जरा अवस्थारूप स्थूल शरीरका विकार अज्ञानसे आत्मामें भासता है वैसे ही एक शरीरसे दूसरे शरीरको प्राप्त होनारूप सूक्ष्म शरीरका विकार भी अज्ञानसे ही आत्मामें भासता है इसलिये तत्त्वको जाननेवाला धीर पुरुष इस विषयमें नहीं मोहित होता है-

मात्रास्पर्शास्तु कौन्तेय शीतोष्णसुखदुःखदाः
आगमापायिनोऽनित्यास्तांस्तितिक्षस्व भारत

मात्रास्पर्शाः, तु, कौन्तेय, शीतोष्णसुखदुःखदाः, आगमापायिनः, अनित्याः, तान्, तितिक्षस्व, भारत ॥१४॥

कौन्तेय	=हे कुन्तीपुत्र	तु	=तो
शीतोष्ण-सुखदुःखदाः	=सर्दी गर्मी और सुख दुःखको देनेवाले	आगमापायिनः	=क्षणभङ्गुर (और)
		अनित्याः	=अनित्य हैं (इसलिये)
मात्रास्पर्शाः	=इन्द्रिय और विषयोंके संयोग	भारत	=हे भरतवंशी अर्जुन